कीटो घोषणापत्र
पर्वतीय बिरादरी का चार्टर

दुनियाभर के पर्वतीय भू-भागों से आये लगभग 40 देशों के प्रतिनिधि 20 सितम्बर 2002 को क्वीतो (इक्वेडोर, लातिनी अमेरिका) में मिले और उन्होंने 'कीतो घोषणापत्र' के निम्न मुख्य बिन्दुओं को स्वीकार किया.. इससे पूर्व अचोकल्ला (बोलीविया) में 22-25 अगस्त 2002 तथा युकसम (भारत) में 15-19 अप्रेल 2002 में इस चार्टर मुख्य बिन्दु प्रस्तुत किये गये थे. अधिक से अधिक पर्वतीय नगर, समुदाय, संगठन और पर्वतवासियों ने इसे अनुमोदित किया. इस व्यापक प्रक्रिया से इसे विश्व के पर्वतीय समाजों का चार्टर बनाने का प्रयास किया गया है. इस चार्टर के माध्यम से विश्व के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले पर्वतीय समाज, 'पर्वत और उनका भविष्य' जैसे विचार को आगे बढ़ाने के लिये संयुक्त रूप से मिलकर कार्य कर सकेंगे.

1. हम पर्वतीय क्षेत्रों के भविष्य पर विश्वास करते हैं!

पहाड़ों से दूर होना इसके निवासियों के लिये एक कष्टप्रद एहसास है. पर्वत, ताकत, धैर्य, आत्मबलिदान, ऊर्जा, साहस, कल्पना और सर्वत्र विजित होने की मांग करते हैं. चूँकि हमने उनकी विशालता, व्यक्तित्व का आदर एवं सम्मान और उसे बचाये रखने का पाठ सीखा है, अत: हमारा पर्वतों के प्रति गहरा लगाव है. पर्वतीय इलाके हमें अपने भू-विस्तार का सौन्दर्य व शांति, प्रेरित करने वाले विचार और एकात्मता देते हैं. प्राकृतिक रूप से प्रकृति के साथ तादाम्य स्थापित कराते हैं. यह प्रेरणास्रोत हैं जो हमेशा ऊपर उठाती है. पर्वतों में हम पीढ़ियों की स्मृतियों को बनाए रखना चाहते हैं जिन्होंने हमारे भूभाग को आकार दिया. हम उन सभी के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने यह विरासत और संस्कृति हमें दी. हमें इस क्षेत्र को बरबाद और नष्ट नहीं होने देना चाहिए. हमारे क्षेत्र न केवल अपने निवासियों को मदद कर सकते हैं बल्कि दूसरों का स्वागत भी. यहाँ एक उचित दृष्टिकोण उपलब्ध है. समकालीन समाज अत्यधिक अपेक्षा रखते हैं. तकनीकी प्रगति कठिनाइयों को हमेशा के लिए दूर नहीं कर सकती बल्कि कम कर सकती है. कृषि, पशुचारण, वानिकी की नई प्रक्रियाएँ, नए उत्पादों से एक नई ऊर्जा और शक्ति दे सकते हैं. हमारे शिल्प और उद्योग नए आर्थिक परिप्रेक्ष्य में अपने आपको ढालने और इस नई प्रक्रिया को आत्मसात करने की क्षमता रखते हैं. हम अपने अधिकांश विशाल संसाधनों-पानी, ऊर्जा, खनिज, स्थान- जिनका आर्थिक पारिस्थितिकीय रूप से दोहन किया जा सकता है तथा जिनके उत्पाद ज्यादा बेहतर और साझे रूप में वितरित किए जा सकते हैं, को यों ही जाने देते हैं. एक पर्यटन नियंत्रित आर्थिक प्रवाह का महत्वपूर्ण और बड़ा कारक हो सकता है. हमारे स्थानीय मूल्य, जानकारियाँ, इलाके की गहरी समझ, प्रगति के लिए हमारी विशेष पूँजी है. हम अपनी इस क्षमता उपयोग करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हैं इसलिए हम पर्वतों के भविष्य के लिए आशान्वित हैं.

2. हम समाज में अपने उचित स्थान की मांग करते हैं.

पर्वतीय इलाके बिल्कुल अलग हैं और उन्हें अतिरिक्त रूप से अलग करने की आवश्यकता नहीं है. समाज को अपने लोगों और न ही उनके इलाकों को अलग-थलग करना चाहिये. न ही यह कोशिश करनी चाहिये कि उनका मानकीकरण किया जाए या उनकी विशिष्टताओं और अनूठेपन को अनदेखा करते हुये अपने में शामिल कर लेना चाहिए. पर्वतीय लोगों की प्रचलित सभी सामाजिक-राजनैतिक अधिकारों के साथ-साथ विकास के समान अवसरों तक पहुँच होनी चाहिये.

हम जानते हैं कि यहाँ तक पहुँचने के लिये एक लम्बा रास्ता बड़ी कठिनाइयों से तय किया जाना है. कुछ-एक पर्वतीय समाजों ने यह रास्ता अख्तियार किया है और वे आज जाने जाते हैं. उनका आदर हो रहा है. लेकिन बहुत सारे ऐसे भी हैं जो अभी भी शोषित, अपमानित और अपने तक सीमित हैं और जिन्हें अभी भी अंगीकार नहीं किया गया है. कुछ एक धनी हुए हैं लेकिन यह सम्पन्नता बाजार से जुड़ी है. कुछ एक ने बाहर सहायता द्वारा अपना स्तर बढ़ाया है. कुछ-एक ऐसे भी हैं जो अपने समुदायों के बीच 'अवैध तरीकों' को बढ़ावा देते हैं.

पर्वतीय लोग बराबरी की मांग नहीं करते, बल्कि वे अन्याय और वंचित स्थितियों के लिए स्थायी और समतामूलक समाधान चाहते हैं. वे यह भली-भाँति परिचित हैं, कि वे दूसरों से जो अपेक्षा कर रहे हैं वह पहले उन्हें स्वयं पर लागू करनी होगी. हम एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं. जो अपने सभी सदस्यों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रगति की प्रमुख सेवायें उपलब्ध करा सके- व्यावसायिक व शैक्षणिक प्रशिक्षण, घर और स्वास्थ, संचार और परिवहन. पर्वतीय समाज हमेशा ऐसी असमान, अन्यायपूर्ण परिस्थितियों में नहीं रहना चाहते जो उनके स्वाभिमान को संकट में डालती हो. वे एक ऐसे समय में जब वे न्याय और अपने अधिकारों की मांग कर रहे हैं, निरन्तर याचक की तरह नहीं बने रहना चाहते. वे लोकतांत्रिक और सशक्त तरीके से अपनी बात को रखना और अपने प्रतिनिधित्व की रक्षा करना चाहते हैं.

3. हम पर्वतीय क्षेत्रों के लिये सम्भावनाओं की सीमाओं को विस्तार देना चाहते हैं.

हमारे इलाके जो लम्बे समय तक तिरस्कृत रहे, आज आकर्षण का विषय बन रहे हैं. कुछ लोगों के लिये यह ऐशो-आराम के लिये बने इलाके हैं, तो दूसरों के लिये यह एक ऐसा प्राकृतिक क्षेत्र है जो केवल संरक्षण के लिए बना है. लेकिन पर्वतों को मात्र इन दो पहलुओं तक ही सीमित नहीं किया जा सकता. हमें यह भी सोचा होगा कि उपरोक्त दोनों प्रक्रियाएँ एक संतुलित समाज, प्राकृतिक संपदा और प्रगति का बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं. लेकिन केवल यह ही हमारी पहचान नहीं होनी चाहिए. हम पूरी तरह एक मेजबान इलाके या प्रकृति के रखवाले या सेवा देने वाले समाज नहीं बनना चाहते. हमारी और भी अभिलाषाएँ हैं और भी संसाधन हैं जिन्हें हम विकसित करना चाहते हैं. हम एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं जिसमें आर्थिक एकता तथा सामाजिक समृद्धि का आधार हमारी विविधता तथा सामाजिक और मानवीय मूल्य हों. हम ऐसी गतिविधियाँ चाहते हैं जो, मिट्टी, खेती, पशुचारण, वानिकी से जुड़ी हों, और समाज को जीवन निर्वाह का आधार दे सकें. प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित व पुनर्जीवित कर सकें. हम पर्वतों की विरासत या इलाकों को फार्मों के रूप में बेच कर लाई जाने वाली समृद्धि को पूरी तरह नकारते हैं. पर्वतीय समाजों और राष्ट्रों के व्यापक हित के लिये पर्वतों की समृद्धि बिना अपनी संपदा को नष्ट किये उत्पादकता को बढ़ा कर उचित मूल्य निर्धारित करके और हमारी क्षमताओं के बीच से पैदा होनी चाहिये. इस तरह हम युवाओं का आह्वान करना चाहते हैं और यह विकल्प रखना चाहते हैं कि पर्वतों 'अपने देश' के विकास के लिए अपनी सम्पूर्ण सृजनशीलता का भरपूर उपयोग करें.

4. हम अपने विकास का नियंत्रण वापस अपने हाथों में लाना चाहते हैं.

हम यह महसूस करते हैं कि अपने इलाकों के भविष्य निर्धारण में हमारी बहुत ही मामूली भूमिका है. प्राय: बाहरी संस्थाओं द्वारा हमारे संसाधनों के विषय में उनके महत्वपूर्ण निर्णय बिना हमारी सहभागिता के ले लिए जाते हैं. हमारे इलाकों का प्रबन्धन प्रशासन के हाथ में रहता है जो इसके उपभोग को संकीर्णता से सीमित कर देना चाहता है. बाहरी ऐजेन्ट, संस्थायें या संगठन बहुधा ऐसे मॉडल थोपते हैं जो स्थानीय ढाँचे को कम करके आँकते हैं. हम ऐसी 'लाबियों' के विषय बने हैं जो बिना हमारे और बहुधा हमारे विरुद्ध हमारी खुशियों का निर्धारण करना चाहते हैं. पहाड़ आज एक उपनिवेश बनते चले जा रहे हैं, एक 'आब्जेक्ट-टेरेटरी' जिनका भविष्य बिना उन लोगों की सहमति, जो स्थानीय नगर या समाज के घटक हैं, से निर्धारित किया जाता है. स्थितियों में पर्याप्त पकड़ न होने के कारण, हम परिवर्तन लाने, ऐसी सामाजिक आर्थिक शक्तियों को नियंत्रित करने में, जो सामाजिक विकास के लिये महत्वपूर्ण हैं, अक्षम हैं.

हम ऐसी स्थितियों का अन्त कर देना चाहते हैं. हम अपने इलाकों के प्रवक्ता बनाना चाहते हैं. पर्वतीय लोगों को अपने भविष्य निर्धारण के लिये केन्द्रीय भूमिका की सशक्त मांग करनी चाहिये. उन्हें अपने जनप्रतिनिधियों से विचार विमर्श कर, जनतांत्रिक तरीके से विकसित की गई व्यवस्थाओं के माध्यम से अपने इलाकों के प्रबन्धन का अधिकार पुन: अपने हाथों में वापस लेना चाहिये. हम अपने संसाधनों के दोहन में सिद्धहस्तता और इसके आर्थिक परिणामों का पूरा लाभ उठाना चाहते हैं. हम अपने इलाकों के विकास और प्रबन्धन का रास्ता स्वयं तय करना चाहते हैं. अपनी समझ और निर्णय की क्षमताओं को बेहतर करते हुये हम अपने उत्पादों का नियंत्रण अपने हाथों में लेना और उसकी दिशा स्वयं तय करना चाहते हैं.

हम ऐसे वैज्ञानिकों चाहे उनकी कुछ भी विशेषज्ञता हो और विशेषज्ञों को चाहते हैं जो हमारे साथ-साथ काम कर सकें. हम उन सभी जगहों पर जहाँ हमारे जीवन और भविष्य को प्रभावित करने वाले निर्णय लिये जाते हैं, उपस्थित रहना चाहते हैं. हम चाहते हैं कि अपने समुदायों संगठनों के माध्यम से एक उचित साझीदार के रूप में हमारी पहचान हो, जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णयों में हमारी निर्णायक भूमिका हो.

5. हम एक सशक्त और संयुक्त समाज की तरह काम करना चाहते हैं.

हम में से हर व्यक्ति, व्यक्तिगत रूप से अपने इलाके के लिये अपनी विशेषज्ञतानुसार अपना उत्तरदायित्व समझ बहुत कुछ कर सकता है. पर्वतों को ऐसे प्रयासों की बहुत आवश्यकता है. लेकिन हमारी सही क्षमता तभी सामने आयेगी जब हम अपने समूचे समाज, जिससे से हम आये हैं, के लिये अपने संयुक्त प्रयासों से एक ऐसे साझे रास्ते को बुन सकें जहाँ पर्वतीय कस्बों और समुदायों के साझे संसाधन एक जगह पर आ सकें. यह पर्वतीय समाजों पर ही निर्भर करता है कि वह आगे आकर हमारे संयुक्त संकल्प की इस चिंगारी को और आगे ले जायें. यह हम सब पर है कि हम उन्हें ठोस कानूनी, आर्थिक, तकनीकी, वैज्ञानिक-चीजें दें, ताकि वो अपनी साझी सीमाओं का बेहतर प्रबन्धन कर सकें, लोगों को बेहतर सेवायें उपलब्ध करा सकें. सुविधायें विकसित कर सकें, साझे संसाधनों और आर्थिक विकास को आगे बढ़ा सकें तथा स्थानीय संस्कृति की सम्पन्नता को बरकरार रख सकें.

यह समुदायों पर है कि वे एक ऐसे स्तर तक पहुँच सकें जहाँ वे आपसी सहयोग से इस लक्ष्य को हासिल कर सकें. एक नागरिक के रूप में हमारी प्रतिबद्धता ही सामूहिक सफलता की कुंजी है. यदि प्रबंधन हमें सौंपा जाता है तो नागरिकों की सीधी भागीदारी और निरन्तर समीक्षा भी सुनिश्चित की जानी चाहिए. यह अपने समुदायों के विभिन्न घटकों विशेष रूप से वंचित और हाशिए पर रह रहे लोगों को आगे लाने, उनकी क्षमताओं को विकसित करने तथा प्रगति को सुनिश्चित करने का उचित मूल्य होगा. अपनी अनुभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समस्त संसाधनों का उपयोग करने के पश्चात की हम पर्यावरणीय

संकट से ग्रस्त उन समाजों, जो अपने संसाधन खो चुके हैं, की आवश्यकताओं के लिए राज्य से विचार करने को कह सकते हैं. राज्य का पहला कर्तव्य न्याय है. अलग-अलग स्थितियाँ अलग-अलग नीतियों की माँग करती हैं. राज्य का दूसरा कर्तव्य प्रबंधन की स्वतंत्रता है. एक लोकतांत्रिक समुदाय का तात्पर्य स्वायत्त प्रबंधन है.

6. हम अपने से सम्बन्धित निर्णयों को प्रभावित करने के लिये संगठित होना चाहते हैं.

पर्वतीय क्षेत्रों का विकास आज भी बड़ी सीमा तक राष्ट्रीय स्तर पर खेले जाने वाले वित्तीय दाँव-पेचों से जुड़े नियमों या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हुये वित्तीय समझौतों पर निर्भर करता है. कृषि, व्यवसाय, जंगल, उद्योग, व्यापार, नौकरी और यहाँ तक कि संस्कृति भी इस तंत्र का हिस्सा बन गये हैं. पर्वतीय क्षेत्र तो विशेष रूप से अपनी नाजुकता और सीमित स्पर्धा के कारण कई तरीकों से उदारवादी नीतियों के कारण संकट में फंस गये हैं. अपनी कमजोरियों के कारण ये पूरी तरह अपने समाज पर निर्भर हैं. यही कारण है कि हमें उन सभी जगहों पर उपस्थित रहना है जहाँ स्थानीय से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक हमारे इलाकों के विषय में निर्णय लिये जा रहे हों. हमारे प्रवक्ताओं को तब अच्छी तरह सुना जायेगा जब वे पर्वतीय आबादी के प्रतिनिधि होंगे. उनकी बातों पर तभी सहमति व्याप्त होगी जब वे उच्च शोध अध्ययन और प्रमाणों पर आधारित अपने तर्क देंगे.

हमारे लिये यह जरूरी है कि हम उन संगठनों, जिनके पास कार्य की सशक्त पृष्ठभूमि है, उन्हें साथ उन्हें यह क्षमता प्रदान करें कि वह लोकतांत्रिक वैधानिकताओं के साथ हमारे प्रतिनिधियों के तौर पर वार्ता कर सकें. इन संस्थाओं का अस्तित्व और सुदृढ़ता पर्वतीय लोगों के लिये इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि वे अभी तक अपने देश में उचित प्रतिनिधित्व नहीं पा सके हैं. साथ ही इसलिये भी कि, एक ऐसा स्वाभाविक आन्दोलन खड़ा हो सके जो भौगोलिक सीमाओं से ज्यादा जनकेन्द्रित हो. अत: आवश्यक है कि हम हर स्थान पर पर्वतीय समाजों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित कर सकें ताकि हमें अधिकतम लाभ मिल सके. हमें अपनी समस्याओं के वैश्विक पहलुओं को भी समझना होगा और उससे संघर्षरत शक्तियों के साथ भी जुड़ना होगा.

7. हम पर्वतीय महिला व पुरुषों के मिले जुले समाज का निर्माण करना चाहते हैं.

बावजूद इसके कि हममें सांस्कृतिक, आयजनित परिस्थितियों, सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता है, हम समझते हैं कि पर्वतों के मुद्दों को लेकर सारे महाद्वीपों उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम-के पर्वतीय समाजों को हम एक साथ ला सकते हैं. हम में पर्वतीय भू-भागों के प्रति लगाव है. इस लगाव और सम्बन्ध को कमजोर न पड़ने देने का संकल्प, है. पहाड़ों में रहने और इस इच्छा को हमेशा बनाए रखने की शक्ति है.

हम समझते हैं कि आज भी हम ऐतिहासिक सन्दर्भों में "अपने नियंत्रणाधीन समान विकास" जैसी मूलभूत चुनौती का सामना कर रहे हैं. जहाँ, हमारी विशिष्टता और विविधता भरी पहचान एक सांस्कृतिक मॉडल के बीच खोती जा रही है. जहाँ लगातार बढ़ती जा रही दूरियों तथा विलम्ब से कमजोर और अशक्त लोगों के लिये खतरा बढ़ता जा रहा है. हम समस्त पर्वतीय समाजों के हित हेतु, अपने संसाधनों का प्रबन्धन तथा एक दूसरे की सहायता करने व इन चुनौतियों का सामना करन के लिए एक साथ आना चाहते हैं.

हम ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं, जहाँ सर्वाधिक वंचित को सबसे पहले सुरक्षा दी जा सके. हम प्रत्येक को यह जताना चाहते हैं-चाहे वह पर्वतीय समाज हों, राष्ट्र या अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय, कि पर्वत किसका प्रतिनिधित्व करते हैं और यह भी कि उत्पाद, सेवाओं, पर्यावरण, सामाजिक कार्यव्यवहार, सामुदायिक एवं स्थानिक प्रबन्धन, मूल्य और संस्कृति के संदर्भ में मानवता के लिये पर्वतों का कितना योगदान है.

हम राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों के सन्दर्भ में अपने उत्तरदायित्व को पूरी तरह समझना चाहते हैं. पर्वतीय समाज यह सब तभी उचित तरीके से प्राप्त कर सकते हैं जब वे लोकतांत्रिक तरीके से संगठित हों, और अपने क्षेत्रों के भविष्य को नियंत्रित करें. हमारे इस गठजोड़ को, ऐसे सभी अलग-अलग लोगों को एक ऐसे साझे प्रयास जो उन्हें सर्वाधिक प्रिय हैं के लिए साथ आने हेतु प्रेरित करना चाहिये, जहाँ उनके देश का भविष्य भी उनके हाथों में हो. इस तरह हम स्थानीय समुदायों से आरम्भ करते हुये सभी पर्वतीय क्षेत्रों के भविष्य के लिये एक यथार्थवादी विश्व समाज का निर्माण कर सकते हैं.

इस चार्टर के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये जो कि निम्न हैं-

1. पर्वतीय क्षेत्रों के लिये नये दृष्टिकोण का विकास
2. नये नवीन सामाजिक, राजनैतिक अधिकार हासिल करना
3. पर्वतीय क्षेत्रों के लिये सम्भावनाओं की सीमाओं का विस्तार
4. अपने विकास के लिये नियंत्रण की पुनर्प्राप्ति
5. समुदायों की स्वायत्ता व सहअस्तित्व का पुनर्स्थापना
6. प्रतिनिधि पर्वतीय संस्थाओं का गठन
7. एक सचेत विश्वव्यापी समुदाय का निर्माण

हम प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं कि-

1. उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये हम अपने कार्य और उत्तरदायित्व के क्षेत्र में पर्वतीय समाजों व संस्थाओं को जानकारी देने और प्रोत्साहित करने के लिये कार्य करेंगे.
2. पर्वतीय समाजों में आन्दोलन विकसित करने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करेंगे. इस हेतु-
   -हम देश में पर्वतवासियों के संगठन जो डब्ल्यू.एम.पी.ए. के क्रम में गठित किये गये हैं और जिसमें स्थानीय क्षेत्रीय समुदायों, ऐसी संस्थाओं, जो उस क्षेत्र में प्रबन्धन और विकास में भागीदारी करती हों, के प्रतिनिधियों, शोधकर्त्ताओं व विशेषज्ञों, जो पर्वतीय समाजों के साथ मिल कर कार्य कर रहे हों, का सहयोग लेकर बैठकें आयोजित करेंगे.

- एक बार जब ऐसे राष्ट्रीय समूह गठित हो जायें, एक बड़े स्तर पर चाहे वह महाद्वीपीय या पर्वतीय श्रृंखलाओं के बराबर विस्तृत हों उन्हें, संगठित किया जायेगा.

- इस हेतु उन्हें डब्ल्यू.एम.पी.ए. में संगठित करेंगे.

(3) विभिन्न पर्वतीय क्षेत्रों के लोगों के बीच कार्य व सम्पर्क विकसित करेंगे.

(4) इस संगठनों व अन्य संस्थाओं तथा गैर सरकारी संस्थाओं के सहयोग से पर्वतीय लोगों के बीच साझे कार्यक्रम विकसित करेंगे.

(5) विभिन्न संगठनों, आन्दोलनों जिनके उद्देश्य और मूल्य समान हों, के बीच सहयोग या साझेदारी विकसित करेंगे.

(यह माउन्टेन चार्टर, क्षेत्रीय डब्ल्यू.एम.पी.ए. कार्यालयों के माध्यम से विश्व भर के पर्वतीय कस्बों, समुदायों, संस्थाओं के लिये प्रस्तावित किया गया था.)